

इति श्री वात्स्यायनीये कामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे रतावस्थापन प्रीतिविशेष प्रथमोऽध्यायः॥

[www.freehindipdfbooks.com](http://www.freehindipdfbooks.com)

## अध्याय 2 आलिंगन विचार प्रकरण

**१लोक-१. संप्रयोगाअंग चतुः षष्ठिरित्याचक्षते। चतुःषष्ठिप्रकरणत्वात्॥**

अर्थ- कामसूत्र के विद्वानों ने संभोग कला के 64 अंगों के बारे में बताया है।

**१लोक-२. शास्त्रमेवेदं चतुःषष्ठिरित्याचार्यवादः॥**

अर्थ- बहुत से आचार्य कहते हैं कि पूरे काम-शास्त्र के ही 64 अंग हैं।

**१लोक-३. कलानां चतुःषष्ठित्वातासां च संप्रयोगाअंगभूतत्वात्कलासमूहो वा चतुःषष्टरिति। ऋचां दशतयीनां च संज्ञितत्वात्। इहापि तदर्थसम्बन्धात्। पञ्जालसंबन्धाच्च बहौरेषा पूजार्थ संज्ञा प्रवर्तिता इत्येके॥**

अर्थ- यह 64 कलाओं की संख्या है क्योंकि कलाएं संभोग का अंग मानी जाती हैं। कलाओं की संख्या होने से कामशास्त्र को भी 64 कलाओं वाला माना जाने लगा है। जिस प्रकार से ऋग्वेद में दशमंडल होने से उसे दशतयी कहा जाता है।

**१लोक-(४)-आलिंगनचुम्बननखच्छेद्यदशनच्छेद्यसंवेशनसीत्कृतपुरुषायितौपरिष्यकानामष्टानामष्टाधा विकल्पभेदादष्टावष्टाकाश्चतुः षष्ठिरिति बाभ्रवीयाः॥**

अर्थ- बाभ्रवीय आचार्यों के मुताबिक आलिंगन, चुंबन, नखक्षत (नाखूनों से काटना), दंतक्षतों (दाँतों से काटना), संवेशन (साथ-साथ सौना), सीत्कृत, पुरुषायित (विपरीत आसन) तथा मुखमैथुन 8 प्रकार की संभोग क्रिया होती है और इनके भी 8-8 भेद होने से 64 प्रकार की संभोग कलाएं होती हैं।

**१लोक-५. विकल्पवर्गाणामष्टानां न्यूनाधिकत्वदर्शनात् प्रहणनदिरुतपुरुषोपृष्ठतचित्रतादीनामन्येषामपि वर्गाणामिह प्रवेशनात्प्रायोवादोऽयम्। यथा सप्तपर्णो वृक्षा। पञ्जवर्णो बलिरिति वात्स्यायनः॥**

अर्थ- वात्स्यायनः के मुताबिक बाभ्रवीय आचार्यों का संभोग कला के 64 भेदों के बारे में दिया गया मत गलत है क्योंकि इनमें से सबसे 8-8 भेद नहीं होते बल्कि किसी के कम होते हैं तो किसी के ज्यादा होते हैं। इसके अलावा इन आठों से अलग प्रहणन, विरुत पुरुषोपसृत, चित्रत आदि नाम के और भी संभोग बाभ्रवीयों के साम्प्रयोगिक अधिकरण में सन्मिविष्ट हैं। इसलिए साम्प्रयोगिक अधिकरण में 64 अंगों को मानना सही नहीं है।

इसके अलावा वात्स्यायन मुनि कुंवारे और मनचले लोगों के लिए और विवाहित लोगों के लिए आलिंगन भेद बताते हैं।

**१लोक-६. तत्रासमागतयोः प्रीतिलिंगद्योतनार्थमालिंगन चतुष्टयम्। स्पृष्टकम्, विद्धकम्, उदधृष्टकम्, प्रीडितकम्, इति॥**

अर्थ- जो स्त्री और पुरुष मनचले और कुंवारे होते हैं उन्हें आपस में अपने प्यार को प्रकट करने के लिए चार प्रकार के आलिंगन करने चाहिए- स्पृष्टक, विद्वक, उदधृष्टक और पीडितक।

**१लोक-७. सर्वत्र संजार्थनैव कर्माप्तिदेशः॥**

अर्थ- स्पृष्टक, विद्वक आदि पारिभाषिक अल्फाज अपने नाम से ही अपने कर्माप्तिदेश को सूचित करते हैं।

इसके अंतर्गत हर आलिंगन का लक्षण बताते हैं-

**१लोक-८. संमुखागतायां प्रयोज्यायामन्यापदेशेने गच्छेतो गात्रेण गात्रस्य स्पर्शन स्पृष्टकम्॥**

अर्थ- स्पृष्टक-

अपने सामने से आती हुई स्त्री के जिस्म को किसी बहाने से छूना स्पृष्टक आलिंगन कहलाता है।

**१लोक-९. प्रयोज्यं स्थितमुपविष्टं वा विजने किंचिद् गृहणती पयोधरेण विद्धयेत्। नायकोऽपि तामवपीड्यच गुहणीयादिति विद्धकम्॥**

अर्थ- विद्धक-

जब स्त्री पुरुष को किसी एकांत स्थान में बैठे हुए या खड़े हुए देखती हैं तो किसी वस्तु को उठाने के बहाने अपने स्तनों को उसके शरीर से छुआ दे तथा पुरुष भी उसके स्तनों को कसकर दबाए। इसको विद्धक आलिंगन कहा जाता है।

**१लोक-१०. तदुभयमनतिप्रतसंभाषणयोः॥**

अर्थ- इन दोनों प्रकार के आलिंगनों का प्रयोग तभी करना चाहिए जब स्त्री और पुरुष आपस में ज्यादा वार्तालाप न कर रहे हो।

**१लोक-११. तमसि जनसंबाधे विजने वाथ शनकैर्गच्छतोर्नातिहस्वकालमुद्धर्षणं परस्परस्य गात्राणामुदघृष्यकम्॥**

अर्थ- उदघृष्टक-

अगर भीड़-भाड़ में, अंधेरे में या एकांत में दोनों के ही शरीर एक-दूसरे से रगड़ खाते हैं तो उसे उदघृष्टक आलिंगन कहते हैं।

**१लोक-१२. तदेव कुड्यसंदंशन स्तम्भसंदंशन वा स्फुटकमवपीड्येदिति पीडितकम्॥**

अर्थ- किसी खंभे या दीवार के सहारे खड़े होकर जब स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के शरीर के कामुक अंगों को जोर-जोर से दबाते हैं तो उसे पीडितक आलिंगन कहा जाता है।

**१लोक-१३. तदुभयमवगतपरस्पराकारयोः॥**

अर्थ- उदघृष्टक और पीडितक आलिंगन ऐसे स्त्री और पुरुषों के लिए होते हैं जो आपस में तो बहुत प्यार करते हैं लेकिन उनके बीच में किसी तरह का शारीरिक संबंध न बना हो।

इसमें शादीशुदा स्त्री और पुरुषों के आलिंगनों के बारे में बताया गया है-

**१लोक-१४. लतावेष्टिकं वृक्षाधिरूढकं तिलतण्डुलकं क्षीरनीरकमिति चत्वारि संप्रयोगकालेऽ।**

अर्थ- संभोग क्रिया के समय लतावेष्टिक, वृक्षाधिरूढक, तिलतण्डुक और क्षीरनीरक आलिंगनों को सबसे ज्यादा अच्छा माना गया है।

इसके अंतर्गत हर व्यक्ति के लक्षण अलग-अलग बताए जा रहे हैं-

**१८०क-१५. लतेव शालमावेष्टयन्ती चुम्बनार्थं मुखमवनमयेत्। उद्धत्य मन्दसीत्कृता तमाश्रिता वा किंचिद्वामणीयकं पश्येतल्लातावेष्टितकम्॥**

अर्थ- इसमें हर एक के लक्षणों को बताया जा रहा है-

लतावेष्टिक- जिस तरह से एक पेड़ के ऊपर एक लता लिपट जाती है वैसे ही स्त्री पुरुष से लिपटकर मुंह को हल्का सा झुकाकर थोड़ा हटकर सिसकारियां लेती हुई उसके मुख-सौंदर्य का अवलोकन करें तो इसको लतावेष्टिक आलिंगन कहते हैं।

**१८०क-१६. चरणेन चरणामाक्रम्य द्वितीयेनोरुदेशामाक्रमन्ती वेष्टयन्ती वा तत्पृष्ठसकैबाहुद्वितीयेनांसमवनमयन्ती ईषन्मन्दं सीत्कृतकूजिता चुम्बनार्थमेवाधिरोदुमिच्छेदिति वृक्षाधिरूढकम्॥**

अर्थ- वृक्षाधिरूढकम्- जिस तरह से पेड़ पर चढ़ते हैं उसी तरह वृक्षाधिरूढकम् आलिंगन में स्त्री अपने एक पैर से पुरुष के पैर को दबाती हैं और अपने दूसरे पैर से पुरुष के दूसरे पैर को पूरी तरह से लपेट लेती हैं। इसके साथ ही अपने एक हाथ को पुरुष की पीठ पर रखकर दूसरे हाथ से उसके कंधे तथा गर्दन को नीचे की तरफ झुकाती हैं और फिर धीरे-धीरे से पुरुष को चूमने लगती हैं और उस पर चढ़ने की कोशिश करती हैं। इस आलिंगन को वृक्षाधिरूढकम् आलिंगन कहा जाता है।

**१८०क-१७. तदभ्यं स्थितकर्म॥**

अर्थ- लतावेष्टिक और वृक्षाधिरूढक आलिंगनों को संभोग क्रिया करने से पहले ही खड़े-खड़े किया जाता है।

**१८०क-१८. शयनगतावेवोरुव्यत्यांसं भुजव्यत्यांसं च ससंघर्षमिव घनं संस्वजेते ततिलतण्डुलकम्॥**

अर्थ- तिलतण्डुलक-

पलंग पर लेटा हुआ पुरुष अगर स्त्री के दाईं ओर लेटा होता है तो उसे अपनी बाईं टांग को स्त्री की जांघों के बीच तथा बाएं हाथ को उसकी दाईं कांख के बीच डालना चाहिए और फिर स्त्री को भी पुरुष की ही तरह आलिंगन करना चाहिए। इस प्रकार के आलिंगन में दोनों की टांगें तथा भुजाएं उस तरह मिल जाती हैं जैसे कि चावल में तिल इसलिए इसको तिलतण्डुलकम् आलिंगन कहते हैं।

**१८०क-१९. रागान्धावनपेक्षितात्ययौ परस्परमनुविशत इवोत्सङ्गतायामभिमुखोपविष्टायां शयने वेति क्षीरजलकम्॥**

अर्थ- क्षीरजलक-

ज्यादा काम-उत्तेजित होने के बावजूद भी किसी चीज की परवाह न करते हुए जब स्त्री और पुरुष एक-दूसरे में समा जाने की कोशिश में मजबूत आलिंगन करते हैं तो उसे क्षीरजलक आलिंगन कहा जाता है। यह आलिंगन तभी मुमकिन हो सकता है जब स्त्री पुरुष की गोद में बैठकर अपनी दोनों टांगों को उसकी कमर में फंसा ले तथा दोनों अपनी-अपनी छाती को आपस में मिलाकर जोर-जोर से दबाएं। नहीं तो दोनों पलंग पर एक-दूसरे की तरफ मुंह करके लेटे रहें।

**१८०क-२०. तदुभ्यं रागकाले॥**

अर्थ- तिलतण्डलक और क्षीर जलक आलिंगन तभी करने चाहिए जब दोनों की काम-उत्तेजना चरम सीमा पर पहुंचने वाली हो।

१८०क-२१. इत्युपगूहनयोगा ब्राभवीयाः॥

अर्थ- आचार्य वाभवीय द्वारा बताए गए आलिंगन के भेद समाप्त होते हैं।

१८०क-२२. सुवर्णनाभस्य त्वधिकमेकाङ्गोपगूहनचतुष्टयम्॥

अर्थ- इसमें सुवर्णनाभ जी के बताए गए चार प्रकार के आलिंगनों को बताया जा रहा है।

१८०क-२३. तत्रोरुसन्दंशेनैकमूरुमूरुद्वयं वा सर्वप्राणं पीडयेदित्यूपगूहनम्॥

अर्थ- अरुपगूहन-

स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे की तरफ मुँह करके लेट जाना चाहिए तथा अपनी एक जांघ से सहभागी के एक जांघ को बहुत जोर से या दोनों जांघों से उसकी दोनों जांघों को जोर से दबाने को अरुपगूहन आलिंगन कहा जाता है।

१८०क-२४. जघनेन जघनमवपीडयच प्रकीर्यमाणकेशहस्ता नखदशनप्रहणनचुम्बनप्रयोजनाय तदुपरि  
लङ्घयेत्तजघनोपगूहनम्॥

अर्थ- जघनोपगूहन- लेटी हुई अवस्था में जब स्त्री काम-उत्तेजना को तेज करने के लिए पुरुष की जांघ को अपनी जांघ से दबाती हुई उसके ऊपर लेट जाती है और फिर उसके मुँह को चूमती है, उसके शरीर पर दांतों से काटती हैं और नाखून गढ़ती हैं तो उसे जघनोपगूहन आलिंगन कहते हैं।

१८०क-२५. स्तनाभ्यामुरः प्रविश्य तत्रैय भारमारोपयेदिति स्नालिङ्गनम्॥

अर्थ- स्तनालिंगन-

जब स्त्री अपने स्तनों को पुरुष की छाती से लगाकर उनका सारा वजन पुरुष की छाती पर डाल देती है और उसके बाद जोर से दबाती है तो उसे स्तनालिंगन आलिंगन कहते हैं।

१८०क-२६. मुख्ये मुखमासज्याक्षिणी अक्षणोर्ललाटेन ललाटमाहन्यात्यात्साललाटिका॥

अर्थ- ललाटिका-

अपने सहभागी के मुँह के सामने अपना मुँह और उसकी आंखों के सामने अपनी आंखें करके उसके मस्तक से अपने मस्तक को दबाने को ललाटिका आलिंगन कहा जाता है।

१लोक-27. संवाहनमप्युपगृहनप्रकारमित्येके मन्यन्ते। संस्पर्शत्वात्॥

अर्थ- कुछ कामशास्त्रियों के अनुसार अपने मुट्ठी से अपने सहभागी के शरीर को दबाने की क्रिया को भी आलिंगन कहा जाता है क्योंकि इससे भी स्पर्श सुख मिलता है।

१लोक-28. पृथक्कालत्वादधिनप्रयोजनत्वादसादारणत्वान्नेति वात्स्यायनः॥

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक मुट्ठी से शरीर को दबाने की क्रिया को आलिंगन नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह सिर्फ थकावट दूर करने के लिए होता है न कि संभोग क्रिया के लिए।

१लोक-29. पृच्छतां शृण्वतां वापि तथा कथयतामपि। उपगृहिणिं कृत्स्नं रिरंसा जायते नृणाम्॥

अर्थ- जो भी व्यक्ति इस आलिंगन विधि को पूछेगा या सुनेगा या फिर किसी को बताएगा उसके अंदर भी स्त्री के साथ संभोग करने की इच्छा जागृत हो जाएगी और जो लोग इस विधि को प्रयोग में लाएंगे तो वह संभोग के समय मिलने वाले पूरे आनंद को प्राप्त करेंगे।

१लोक-30. येऽपि हयशास्त्रिताः केचित्संयोगा रागवर्धनाः। आदरेणैव तेऽप्यत्र प्रयोज्याः सांप्रयोगिकाः॥

अर्थ- इनके अलावा बहुत से अशास्त्रीय लेकिन काम-उत्तेजना को बढ़ाने वाले आलिंगन हैं लेकिन उनके बारे में यहां पर बताया नहीं जा रहा है। संभोग क्रिया में प्रयुक्त होने वाले हर तरह के और बहुत से स्थानों में प्रचलित आलिंगन को यथास्थान और यथावसर प्रयोग में लाना चाहिए।

१लोक-31. शास्त्राणां विषयस्तावद्यावन्मन्दरसा नराः। रतिचक्रे प्रवृत्ते तु नैव शास्त्रं न च क्रमः॥

अर्थ- शास्त्र के विषय की उसी समय तक जरूरत होती है जब तक कि व्यक्ति काम-उत्तेजना में अंधा नहीं हो जाता। क्योंकि इसके बाद तो शास्त्र और शास्त्र की बताई हूई किसी भी विधि का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

स्त्री को संभोग करने के लिए तैयार करने की प्राकक्रीडा आलिंगन है। संभोग करने से पहले हर बार प्राकक्रीडा करना एक प्राकृतिक क्रिया ही नहीं बल्कि इस क्रिया का एक शुभ चरण भी है। सामान्य तौर पर इस बात को देखा गया है कि संभोग क्रिया से पहले की जाने वाली प्राकक्रीडा को पुरुष द्वारा ही पहल करके शुरू करना होता है।

आचार्य वात्स्यायन ने जिन 64 कलाओं के बारे में बताया है वह उन्हें संभोग क्रिया की प्रमुख भूमिका समझता है। आचार्य पद्मश्री अपने नागरसर्वस्व में हेलाविच्छिति विलोक, किलकिंचित, विभ्रम लीला, विलास, हावविक्षेप, विकृत, मद मोहायित, कुट्टामिति, मुग्धता, तपन और ललित अर्थात् इन 16 भावों को संभोग की प्रवृत्ति समझते हैं।

ऊपर दिए गए 16 भाव स्त्री के अंदर काम-उत्तेजना जागृत होने पर पैदा होते हैं। पुरुष को स्त्री के इन भावों को समझकर संभोग करने से पहले की क्रियाएं जैसे आलिंगन, चुंबन आदि करने चाहिए। जो व्यक्ति स्त्री के इन हाव-भावों को न समझकर ठंडा पड़ा रहता है तथा जब खुद के अंदर काम-उत्तेजना जागृत होती है तो बिना भाव प्रकट

किए आलिंगन के लिए तैयार हो जाता है तो ऐसे पुरुषों को न तो स्त्री का ही सुख प्राप्त होता है और न ही संभोग का सुख।

बहुत से विद्वानों के अनुसार सर्वगुण संपन्न और संभोग की 64 कलाओं में निपुण स्त्री गुणहीन और संकेतहीन पति को ऐसे फैक देती हैं जैसे कि किसी मुरझाई हुई फूलों की माला को फैक देते हैं।

पुरुष चाहे हर तरह की कला में सबसे ज्यादा निपुण हो लेकिन अगर स्त्री उसे काम-कला में अनाड़ी समझाकर धिक्कार देती है तो उसे अपना जीवन बेकार समझना चाहिए।

अंगसंकेत- ज्ञानवृद्धक सवाल तथा कुछ कहने में काम का स्पर्श, कामोत्तेजित अवस्था में बालों का स्पर्श, प्यार का इजहार करने में स्तनों का स्पर्श हाथों के द्वारा करना चाहिए।

सही अवसर को जानने के लिए मध्यमा (हाथ की बीच वाली उंगली) उंगली को तर्जनी उंगली पर चढ़ाना तथा मौका मिलने का संकेत करने के लिए दोनों हाथों में अंजली बांध लेनी चाहिए और फिर बुलाने के लिए उसी उंगली को उल्टी कर लेनी चाहिए।

पूर्व दिशा के संकेत के लिए अंगूठे को प्रयोग किया जाता है। तर्जनी उंगली का दक्षिण दिशा के लिए, पश्चिम दिशा के लिए मध्यमा उंगली का और उत्तर दिशा के लिए अनामिका उंगली का प्रयोग करना चाहिए।

कनिष्ठा की जड़ से शुरू होकर अंगूठे की ऊर्ध्वरे रेखा तक हर उंगलियों में 3-3 रेखा करके 15 रेखा होती हैं और इन्हीं रेखाओं के द्वारा प्रतिपदा से लेकर 15 तिथियों का संकेत दिया जाता है। बाएं हाथ की रेखाओं से शुक्ल पक्ष की तिथियों का और दाएं हाथ की रेखा के द्वारा कृष्ण पक्ष की तिथियों का संकेत होता है।  
पोटली संकेत- प्रेम की खबर पहुंचाने में खुशबूदार सुपारी, आतिथ्य प्रेम की सूचना पहुंचाने में कत्था और छोटी इलायची, जायफल और लौंग से संकेत दिया जाना चाहिए।

मूंगा प्रेम को भंग करने का संकेत है। बहुत दिनों के बाद संभोग करने पर 2 मूंगे कम बुखार में कड़वी वस्तु संभोग के संकेत के लिए मुनक्का होता है।

शरीर के समर्पण के लिए कपास, प्राणों को समर्पित करने में जीरा, डर का इशारा करने में भिलावा और अभय संकेत में हरड़ का संकेत होता है।

मोम की एक गोल सी टिकिया बना लें। फिर उसमें पांचों उंगलियों के नाखूनों के निशान बना दें और उसको लाल धागे से बांध दें। इसको पोटली संकेत कहा जाता है। मदन-क्रीड़ा के संकेत में मोम, अनुराग के लिए लाल धागे का बंधन और कामदेव द्वारा जख्मी होने की सूचना में पांचों उंगलियों के नाखून का निशान बनाया जाता है। इसी वजह से इसे पोटली संकेत कहा जाता है।

वस्त्र संकेत- जिसका शरीर कामदेव के बाण से कटा-फटा हो, ऐसी हालत का संकेत फटे हुए लेकिन अच्छे कपड़े दिखाकर किया जाता है। उत्कट प्रेम को दिखाने के लिए पीले या गेरुए रंग का कपड़ा देना जरूरी है।

जुदाई के समय फटे हुए कपड़ों से और मिलन के समय धागे के साथ बंधन भेजकर संकेत करना चाहिए। एक के प्रेम में एक कपड़ा और दो के प्रेम में दो कपड़े देकर प्रेम का संकेत करना चाहिए।

तांबूल संकेत- पान का बीड़ा 5 प्रकार का होता है-

पलंग के आकार का

चौकोना

अंकुश के आकार का

कौशन या श्लाका।

स्नेह की ज्यादती का संकेत करने के लिए कौशल पान (जिसको कलात्मक तरीके से लगाया जाता है) का प्रयोग करना चाहिए। मदन व्यथा में कंदर्प (तिकोना) बीड़ा देना चाहिए और संभोग करने का संकेत देने के लिए पलंग के आकार का बीड़ा देना चाहिए।

चौकोर पान की बीड़ा दिखाना अनसर का संकेत है। प्रेम के अभाव में बिना सुपारी का पान तथा प्रेम के सद्वाव में इलायची के साथ पान देना चाहिए।

जुदाई में होने वाली हालत का संकेत पान उल्टा लगाकर काले धागे से बांधकर करना चाहिए। संयोग की हालत में एक पान के मुँह को दूसरे पान के मुँह से मिलाकर लाल धागे से बांधकर दिखाना चाहिए। त्याग की सूचना में पान को बीचों-बीच से फाइकर काले धागे से बांधकर संकेत करना चाहिए।

अधिक अनुराग हो जाने पर पान के टुकड़े-टुकड़े करके जोड़ देना चाहिए। बीच में केशर भर दी जाए और बाहर चंदन का लेप कर देना चाहिए।

फूलों की माला का संकेत- अनुराग में लाल, वियोग में गेरुआ और स्नेह की कमी के कारण काले धागे की गूँथी हुई माला का उपयोग करना चाहिए। कामशास्त्र के लेखकों ने स्त्री की चंद्रकांत मणि से उपमा दी है। जिस प्रकार चंद्रकांत मणि चंद्रमा की शीतल किरणों का स्पर्श पाते ही पिघल जाती है उसी तरह से स्त्री पुरुष का संस्पर्श करते ही द्रवित हो जाती है। इसी वजह से बुद्धिमान पुरुष को स्त्री का उपभोग बहुत ही समझदारी के साथ करना चाहिए।

कामोत्तेजित होने के साथ-साथ उसमें विवेक होना बहुत जरूरी है। काम के विद्वानों ने काम के ग्रंथों की रचना उसी उद्देश्य से की है कि संभोग के समय में जानवर की तरह संभोग नहीं करना चाहिए।

आलिंगन-युंबन तथा संकेतों आदि संस्पर्शी और स्त्री के स्वभाव आदि का मनोवैज्ञानिक शारीरिक अध्ययन करके ही संभोग क्रिया में लीन होना चाहिए।

श्लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे साम्प्रयोगिके द्वितीयधिकरणे आलिंगनविचाराः द्वितीयोध्यायः।

### अध्याय ३ चुम्बन विकल्प प्रकरण

१लोक(१)- चुम्बननखदशनच्देद्यानां न पौर्वपर्यमस्ति। रागयोगात् प्राक्संयोगादेषां प्राषान्येन प्रयोगः। प्रहणनसीत्कृतयोश्च संप्रयोगे।

अर्थ- नखक्षत (नाखूनों को गढ़ाना), दन्तक्षत (दांतों से काटना), चुम्बन आदि का प्रयोग अक्सर संभोग क्रिया करने से सहभागी की काम-उत्तेजना को जागृत करने से पहले किया जाता है। यह तीनों एक-दूसरे से पीछे नहीं होते हैं क्योंकि संभोग क्रिया से पहले किसी चीज के लिए नियम नहीं होता कि पहले चुंबन करे या कोई और क्रिया करें। संभोग के समय तो सिर्फ स्ट्रोक और सीत्कार का ही प्रयोग होता है।

१लोक(२)- सर्वं सर्वत्र। रागस्यानपेक्षितत्वात्। इति वात्स्यायनः॥

अर्थ- वात्स्यायन के मुताबिक उत्तेजना किसी नियमों में बंधी नहीं होती है। इसी वजह से चुम्बन, नाखूनों को गढ़ाना और दांतों से काटना आदि क्रियाएं किसी भी समय की जा सकती हैं।

१लोक(३)- तानि प्रथमरते नातिव्यक्तानि विश्रविधिकायां विकल्पेन च प्रयुञ्जीत। तथाभूतत्वाद्रागस्य। ततः परमतित्वरया विशेषवत्समुच्चयेन रागसंधुक्षेणार्थम्॥

अर्थ- पहली बार संभोग क्रिया करते समय चुम्बन, नाखूनों को गढ़ाना और दांतों से काटना आदि क्रियाओं को एकसाथ नहीं करना चाहिए। जिस तरह से शरीर में उत्तेजना बढ़ती है उसी तरह चुम्बन आदि क्रियाओं को करना चाहिए। उत्तेजना बढ़ जाने के बाद चुम्बन आदि का एकसाथ और जल्दी-जल्दी प्रयोग करना चाहिए। इसकी वजह से काम-उत्तेजना तेज होती है और संभोग क्रिया में आनंद आता है।

१लोक(४)- ललाटालकक्पोलनयनवक्षः स्तनोष्ठान्तुर्मर्खेषु चुम्बनम्॥

अर्थ- गाल, आंखे, छाती, माथा, स्तन, नीचे वाला होंठ और जीभ को चूमा जा सकता है। लाटदेश के लोग स्त्री की जांघ, बाहुमूल और नाभि को भी चूमते हैं। काम-उत्तेजना के न्यूनाधिक्य के कारण और देशाचार भेद चुम्बन के स्थानों में भेद है। वात्स्यायन के मुताबिक यहां पर सभी मनुष्यों के चुंबन स्थानों की गणना की गई है।

वात्स्यायन के मुताबिक संभोग के समय काम-उत्तेजना को बढ़ाने के लिए चुम्बन करना चाहिए। लेकिन चुम्बन के साथ नाखूनों को गढ़ाना और दांतों से काटना स्वाभाविक हो जाता है। जब पुरुष कामोत्तेजित हो जाता है तो उसे उस समय यह ध्यान में नहीं रहता कि पहले क्या करें और क्या न करें।

आचार्य वात्स्यायन ने यहां पर राग (उत्तेजना) शब्द देकर अपनी सार्वभौम काम-शास्त्रीय पश्चिम चारुता का परिचय दिया है। संभोग क्रिया करने से पहले रति की पांचर्वीं अवस्था को राग कहते हैं। संभोग की प्रौढ़ इच्छा का नाम रति है और जब यह रति धीरे-धीरे बढ़ती है तो वह प्रेम कहलाती है।

१लोक(5)- ऊरुसंधिबाहुनाभिमूलयोर्लाटानाम्॥

अर्थ- लाट देश के रहने वाले लोग स्त्री के गुप्त स्थानों जैसे हॉठों, जांघ के जोड़, कांख और नाभि को चूमते हैं।

१लोक(6)- रागवशाद्देशप्रदत्तेऽच सन्ति तानि स्थानानि, न तु सर्वजनप्रयोज्यानीति वात्स्यायनः॥

अर्थ- आचार्य वात्स्यायन के मुताबिक जो लोग ऐसे अंगों को चूमते हैं उनका यह चुम्बन देशाचार के अनुकूल है।

१लोक(7)- तद्यथा-निमित्तकं स्फुरितकं घट्टितकमिति त्रीणि कन्या चुम्बनानि॥

अर्थ- जिस लड़की ने अभी युवावस्था में कदम रखा हो उसका चुम्बन 3 तरह का होता है-

निमित्तक

स्फुरितक

घट्टितक

१लोक(8)- बलात्कारेण नियुक्ता मुखे मुखमाधते न तु विच्षेषत इति निमित्तकम्॥

अर्थ- निमित्तक-

जब पुरुष सबसे पहले शर्माने वाली स्त्री से अपने हॉठों पर जबरदस्ती चुंबन कराता है तो स्त्री पुरुष के मुंह पर अपना हाथ रख तो देती है लेकिन अपने हॉठों को चूमने के लिए बिल्कुल भी नहीं हिलाती। इस तरह के चुंबन को निमित्तक कहा जाता है।

१लोक(9)- वदने प्रवेशितं चौष्ठं मनागपत्रपावग्रहीतुमिच्छन्ती स्पन्दयति स्वमोष्ठं नोतरमुत्सहत इति स्फुरितकम्॥

अर्थ- स्फुरितक-

एकबार जब संभोग किया हो जाती है तो उसके बाद पुरुष अपने हौंठों को जब स्त्री के हौंठों पर रख देता है तब शर्माती हुई स्त्री पति के हौंठों को अपने हौंठों से दबाना भी चाहती है और अपने नीचे वाले हौंठ को हिलाती भी है लेकिन शर्म के कारण उसके हौंठ चिपके रह जाते हैं। इस तरह के चुम्बन को स्फुरितक कहते हैं।

१लोक(10)- ईष्टपरिगृहमा विनिमीलितनयना करेण च तस्य नयने अवच्छादयन्ती जिह्वाग्रेण घट्टयति इति  
घट्टितकम्॥

अर्थ- घट्टितक-

संभोग किया का आनंद प्राप्त करने के बाद स्त्री अपने हौंठों पर रखे हुए पुरुष के हौंठों को पकड़ती है लेकिन शर्म के मारे आंखें बंद कर लेती है तथा अपने हाथों से पति की दोनों आंखों को बंद करके जीभ के आगे के भाग से पति के हौंठ को रगड़ती है। इस प्रकार के चुम्बन को घट्टितक कहते हैं।

१लोक(11)- सर्म तिर्यगुद्धान्तमवपीडितकमिति चतुविधमपरे॥

अर्थ- 4 तरह के चुंबन इस तरह से हैं-

सम अर्थात् पति और पत्नी एक-दूसरे के सामने मुँह करके एक-दूसरे के हौंठों को चूसते हैं।

तिर्यक अर्थात् मुँह को थोड़ा सा मोइकर तथा हौंठों को गोल-गोल आकार में बनाकर आपस में पकड़ना।

उदभान्त अर्थात् स्त्री की पीठ की तरफ बैठकर अपने हाथों से उसका सिर तथा ठुड़ी पकड़कर अपनी तरफ घुमाकर हौंठों को चूमना।

अवपीडितक अर्थात् पहले दिए गए तीनों तरह के चुंबनों में हौंठों को बहुत जोर से दबाया जाए।

१लोक(12)- अडलिसंपुटेन पिण्डीकृत्य निर्दशनमोष्ठोपुटेनावपीडित्यवपीडितकं पञ्जममपि करणम्॥

अर्थ- पांचवा भैद-

पुरुष को अपने दोनों हाथों की उंगलियों से स्त्री के दोनों गालों को दबाकर उसके हौंठों को अपने मुँह में लेकर बहुत जोर से इस तरह से दबाना चाहिए कि उसके दांत न गड़ने पाए। इस प्रकार के चुंबन को अवपीडितक कहा जाता है।

१लोक(13)- द्यूत चात्र प्रवर्तयेत्॥

अर्थ- चुम्बन द्यूत-

चुंबन करते समय स्त्री और पुरुष को आपस में बाजी लगानी चाहिए।

१८ोक(14)- पूर्वमधरसम्पादनेन जितमिदं स्यात्।।

अर्थ- पुरुष या स्त्री में से जो भी आपस में से किसी के हौंठ को पहले पकड़ लेता है उसी की जीत मानी जाती है।

१८ोक(15)- तत्र जिता सार्थरुदितं करं विधुनयात्प्रणुदेददशेतपरिवर्तयेद्वलादाहता विवदेत्पुनरप्यस्तु पण इति ब्रूयात्।  
तत्रापि जिता द्विगुणमायस्येत्।।

अर्थ- चुम्बन कलह-

अगर चुम्बनों की बाजी पुरुष मार लेता है तो स्त्री को हाथ-पैरों को पटकना चाहिए, पति को धक्का मारकर हटा देना चाहिए, दांतों से काटना चाहिए तथा दूसरी तरफ मुंह करके सो जाना चाहिए। अगर पुरुष स्त्री का मुंह अपनी तरफ करना चाहे तो उसे उससे कहना चाहिए कि चलो एक बार हो जाए और अगर स्त्री फिर भी हार जाती है तो उसे पहले से ज्यादा क्लेश आदि उत्पन्न कर देने चाहिए।

१८ोक(16)- विश्रब्धस्य प्रमतस्य वाधरमवगृह्य दशनान्तर्गतमनिर्गमे कृत्वा  
हसेदुत्क्रोशेतर्जयेद्वल्गेदाहलयेन्नृत्येतप्रनर्तितभुणा च विचलनयनेन मुखेन विहसन्ती तानि तानि च ब्रूयात्। इति  
चुम्बनयुतकलहः।।

अर्थ- कपटघूत-

चुम्बनों की बाजी लगाने पर दूसरी बार भी हार जाने पर स्त्री को पुरुष के जरा सा भी असावधान होते ही उसके हौंठ को अपने दांतों से दबा लेना चाहिए। ऐसा होने पर स्त्री को जोर से हंसना चाहिए और पुरुष को कहना चाहिए कि अगर छुड़ाने की कोशिश करोगे तो काट लूंगी। इसके बाद अपनी जीत पर इतराती हुई पुरुष को ताना मारे, जो दिल में हो वही बोले, आंखों को घुमाकर और हंसते हुए पुरुष को चुनौती दें। यहां पर चुम्बन द्युत सम्बन्धी प्रेमक्लेश समाप्त होता है।

१८ोक(17)- एतेन नखदशनच्देद्यप्रहणनद्यूतकलह व्याख्याताः।।

अर्थ- चुम्बन क्लेश की ही तरह स्त्री को पुरुष से नखक्षत (नाखूनों को गढ़ाना), दन्तक्षत (दांतों से काटना) तथा प्रहार करने की बाजी भी लगानी चाहिए तथा हारने के बाद उसी तरह से गुस्सा करना चाहिए।

१८ोक(18)- चण्डवेगयोरेव त्वेषां प्रयोगः तत्सात्मयात्।।

अर्थ- यह प्रेम कलह ऐसे स्त्री-पुरुषों के लिए ही ठीक है जो बहुत ही तेज गति से संभोग किया करते हुए बहुत समय तक ठहरते हैं।

१८ोक(19)- तस्यां चुम्बन्त्यामयमप्युतरं गृहणीयात्। इत्युत्तरचुम्बितम्॥

अर्थ- जिस समय स्त्री, पुरुष के होंठों को चूम रही हो उस समय पुरुष को भी स्त्री के ऊपर वाले होंठ को अपने होंठों से दबा लेना चाहिए। इस तरह के चुम्बन को उत्तर चुम्बन कहते हैं।

१९ोक(20)- ओष्ठसंदंशेनावगृह्यौष्ठद्वयमपि चुम्बेत। इति संपुटकं स्त्रियाः, पुंसो वाऽजातव्यञ्जनस्य॥

अर्थ- पुरुष को स्त्री के दोनों होंठों को पकड़कर चुम्बन करना चाहिए। इसी तरह स्त्री भी पुरुष के दोनों होंठों को पकड़कर चूम सकती है। लेकिन यह उन्हीं पुरुषों के साथ संभव है जिनके मूँछे नहीं होती हैं। इस चुम्बन को सम्पुटिकल कहते हैं।

२०ोक(21)- तस्मिन्नितरोऽपि जिहवयास्या दशनान्घट्टयेतालु जिहवां चेति जिहवायुदधम्॥

अर्थ- जीभ, मुँह और दांत युद्ध-

पुरुष जब सम्पुट चुम्बन करता हुआ स्त्री के मुँह के तालु और दांतों में अपनी जीभ को जोर से रगड़ता है तो उसे जिहवायुदध (जीभ का युद्ध) कहते हैं।

२१ोक(22)- एतेन बलाद्वदनरदनग्रहणं दानं च व्याख्यातम्॥

अर्थ- इसी तरह मुखयुद्ध (मुँह का युद्ध) और दन्तयुद्ध (दांतों को युद्ध) भी होता है।

२२ोक(23)- समं पीडितमञ्चितं मृदु शेषाङ्केषु चुम्बन स्थानविशेषयोगात्। इति चुम्बनविशेषाः॥

अर्थ- खास प्रकार के चुम्बन- इन चुम्बनों के अलावा 4 प्रकार के चुम्बन होते हैं-

सम- इस प्रकार के चुम्बन में स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे के सामने बैठकर या लेटकर एक-दूसरे की जांघों, छाती और बगल को चूमना या गुदगुदाना होता है।

पीडित- स्त्री के गालों, नाभि और नितम्बों को जोर से दबाना या उनको नोचना।

अन्धित- स्तनों के नीचे और बाहूमूल में धीरे से गुदगुदी करना या फिर हल्के से चूमना।

मृदु- स्त्री के स्तनों में, गालों में, नितंबों तथा पीठ पर हाथ फेरना या सहलाना।

आचार्य वात्स्यायन चुंबन में बाजी लगाने के बारे में बताते हैं अर्थात् स्त्री या पुरुष में से कौन पहले किसका होंठ चूमता है या पकड़ता है। अगर इसमें स्त्री हार जाती है तो उसे रति कलह करने की राय दी है जैसे वह सिसकियां भरते हुए अपने हाथों को पटके, पुरुष को धक्का मारकर अपने से दूर कर दे, अपने मुंह को दूसरी तरफ घूमा ले। अगर फिर भी पुरुष जबर्दस्ती उसे अपनी तरफ करना चाहे तो स्त्री को उससे झगड़ा करते हुए कहना चाहिए कि चलो एक बाजी फिर से हो जाए।

अगर स्त्री दुबारा से चुंबनों की बाजी हार जाती है तो उसे पहले से भी ज्यादा शेर मचाना चाहिए। इसके बाद अचानक धोखे से पुरुष के होठों को अपने दांतों से दबाकर हंसते हुए अपने जीतने की घोषणा करनी चाहिए। पुरुष को यह कहकर डराए कि अगर छुड़ाने की कोशिश की तो काट लूंगी। आंखों के इशारे से अपनी जीत को जाहिर करे। इसी तरह दांत और नाखूनों से भी चोट पहुंचाने की कला के भेद हैं।

आचार्य वात्स्यायन ने इस तरह के क्लेश की जो सीख स्त्री को दी है उसका अर्थ उत्तेजना को बढ़ाना है। यह जो क्लेश करने के बारे में बताया है वह असली झगड़ा न होकर सिर्फ काम-उत्तेजना को बढ़ाने वाले प्रेम क्लेश होता है। इस तरह के रगड़-झगड़, वाद-विवाद से स्त्री और पुरुष की उन ग्रंथियों से (जिनका संबंध संभोग क्रिया से रहता है) स्राव होता रहता है और शरीर में रोमांच, मन में स्फूर्ति और गुप्त अंगों में उत्तेजना बढ़ती है।

लेकिन इस तरह का प्रेम क्लेश हर किसी स्त्री और पुरुष के लिए सही नहीं है। जो स्त्री-पुरुष बहुत तेजी से संभोग क्रिया करने वाले होते हैं या इस क्रिया के समय जल्दी स्खलित नहीं होते हैं, इस तरह के क्लेश आदि से उनका संवेग बढ़ जाता है, संभोग शक्ति की बढ़ोतरी होती है और शारीरिक तथा मानसिक आनंद प्राप्त होता है।

१८०क(24)- सुप्तस्य मुखमवलोकयन्त्या स्वाभिप्रायेण चुम्बनं रागदीपनम्।।

अर्थ- गुप्त चुम्बन तिथि-

अगर स्त्री सोए हुए पुरुष के मुंह को ताकती हुई चूम लेती है तो वह पुरुष तुरंत उसकी भावनाओं को समझकर जाग जाता है। इस तरह के चुम्बन को रागदीपन कहते हैं।

१८०क(25)- प्रमत्स्य विवदमानस्य वाऽन्यतोऽभिमुखस्य सुप्ताभिमुखस्य वा निद्राव्याघातार्थ चलितकम्।।

अर्थ- अगर पुरुष किसी तरह के झगड़े आदि के कारण स्त्री की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा हो तो उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए स्त्री को साधारण तरीके का चुम्बन करना चाहिए। इस तरह के चुम्बन को चलित कम कहा जाता है।

१८०क(26)- चिररात्रावागतस्य शयनसुप्तायाः स्वाभिप्रायचुम्बनं प्रातिबोधिकम्।।

अर्थ- यदि पुरुष किसी कारण से रात को देर से घर आता है और सोती हुई स्त्री को चूमता है तो इससे पुरुष का मक्षसद भी पता चलता है और स्त्री भी जाग जाती है। इस प्रकार के चुम्बन को प्रातिबोधिक कहते हैं।

श्लोक(27)- सापि तु भावजिजासार्थिनी नायकस्यागमनकालं संलक्ष्य व्याजेन सुप्ता स्यात्॥

अर्थ- पुरुष का इस तरह चुम्बन करके जगाने वाली स्त्री को चाहिए कि वह उसके प्यार की परीक्षा लेने के लिए उसके आने पर बहाना बनाकर सोती रहे।

श्लोक(28)- आदर्शं कुडये सलिले वा प्रयोज्यायायश्छायाचुम्बनमा-कारप्रदर्शनार्थमेवकार्यम्॥

अर्थ- पानी में, आईने में, दीवार पर अगर स्त्री की परछाई दिख रही हो तो पुरुष को अपने प्यार का इजहार करने के लिए उस परछाई का चुम्बन करना चाहिए।

श्लोक(29)- बालस्य चित्रकर्मणः प्रतिमायाश्च चुम्बनं संक्रान्तकमालिंगं च॥

अर्थ- किसी छोटे बच्चे को, तस्वीर को या मूर्ति आदि को चूमने या आलिंगन करने के बहाने अपने मन के भावों को स्त्री पर प्रकट किया जा सकता है।

श्लोक(30)- तथा निशि प्रेक्षणके स्वजनसमाजे वा समीपे गतस्य प्रयोज्याया हस्ताङ्गलिचुम्बनं संविष्टस्य वा पादाङ्गलिचुम्बनम्॥

अर्थ- रात में जिस स्थान पर कोई खेल आदि हो रहा हो या फिर सारे रिश्तेदार इकट्ठे हो रहे हों और वहां पर अगर स्त्री पास ही बैठी हो तो चुपके से उसके हाथ या पैरों की उंगलियों को चूमकर अपने प्यार को प्रकट करना चाहिए।

श्लोक(31)- संवाहिकायास्तु नायकमाकारयन्त्या निद्रावशादकामाया इव तस्योर्वर्दनस्य निधानमुरुचुम्बनं चेत्याभियोगिकानि॥

अर्थ- अगर पुरुष के पैरों को दबाने वाली स्त्री उससे प्रेम करती हो तो अपने प्यार को प्रकट करने के लिए स्त्री को उसकी जांघ पर अपने मुँह को रख देना चाहिए या उसके पैर को अंगूठे को चूसना चाहिए। लेकिन अगर कोई स्त्री को देखता है तो उसे यही लगना चाहिए कि स्त्री को नींद आ रही है इसलिए उसका मुँह पुरुष की जांघ पर पड़ा है।

श्लोक(32)- कृते प्रतिकृतं कुर्याताडिते प्रतिताडितम्। करणेन च तेनैव चुम्बिते प्रतिचुम्बितम्॥

अर्थ- संभोग किया करने से पहले काम-उत्तेजना को तेज करने के लिए जिस तरह का बर्ताव पुरुष करता है, वैसा ही स्त्री को भी करना चाहिए। जिस चीज से पुरुष स्त्री पर प्रहार करता है उसी से स्त्री को भी पुरुष पर प्रहार करना चाहिए। जिस प्रकार पुरुष चुम्बन करता है उसी तरह स्त्री को भी चूमना चाहिए।

जानकारी-

एक-दूसरे के करीब आना, एक-दूसरे का भरोसा जीतना, चुम्बन में क्लेश, प्रहरण, दन्तक्षत, नखाघात आदि स्त्री और पुरुष के प्रेम, भरोसे तथा संभोग-क्रिया को सुखदायी बनाते हैं।

चुम्बन के लिए होठों को खास अंग इसलिए माना जाता है क्योंकि शरीर में सबसे ज्यादा कोमल अंग यहीं होते हैं। होठों के अंदर ऐसी तरंगे बहती हैं जो बाहरी स्पर्श पाते ही उन नाड़ियों और ग्रंथियों को उत्तेजित करके उनका मुँह खोल देती है जिनमें कि अंदर साव होता है। इसके साथ ही पहले सुख का एहसास भी इसी विद्युतधारा से होता है। ये तरंगे इतनी ज्यादा तेज और गतिशील होती है कि युवक और युवती इसके असर में आनंद में भरे रहते हैं। इस समय वह किसी तरह के अच्छे या बुरे परिणाम को न सोचते हुए सिर्फ संभोग सुख के लिए बेचैन रहते हैं।

होठ शरीर के बहुत ही कोमल अंग होते हैं इसी वजह से कोमल भावों को और कोमल प्रभाव डालने में इस अंग की तरंगे बहुत ज्यादा शक्तिशाली होती है। जिस समय स्त्री और पुरुष एक-दूसरे को चुम्बन करते हैं उस वक्त उनके सांस लेना और सांस छोड़ना, उनकी आंखों की रोशनी, शारीरिक ऊर्जा सब कुछ कोमल भावों और प्रभावों से व्याप्त रहता है तथा इन भावों प्रभावों का आदान-प्रदान स्त्री और पुरुष में होता है।

इन्हीं के द्वारा आपस में प्यार, भरोसा और उत्तेजना की बढ़ोतरी होती है। यहां तक कि स्त्री और पुरुष पर इसका असर इतना पड़ता है कि उनमें अगर कोई बुराई होती है तो दूसरे को उसकी वह बुराई भी अच्छी लगती है।

स्त्री और पुरुषों की जिंदगी में नई क्रांति पैदा करने में चुम्बन को सबसे पहला माध्यम माना जाता है। आनंद को महसूस करने का मुख्य द्वारा चुम्बन ही होता है।

१लोक (1)- रागवृद्धौ संघर्षात्मकं नखविलेखनम्॥

### नखच्छेद

अर्थ- उत्तेजना के अधिक बढ़ जाने पर स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के शरीर पर नाखूनों को गढ़ते हैं।

१लोक (2)- तस्य प्रथमसमागमे प्रवासप्रत्यागमने प्रवासगमने क्रुद्धप्रसन्नायां मत्यां च प्रयोगः। न नित्यमचण्डवेगयोः॥

अर्थ- अपने अंदर की काम-उत्तेजना को स्त्री को दिखाने के लिए मन्दवेगी (संभोग क्रिया में पूरी तरह से जो पुरुष संपन्न नहीं होता) पुरुष कहीं दूसरे देश आदि से वापस आने के बाद, सुहागरात के दिन, स्त्री के गुस्से में आने के बाद, काम से खाली होने के बाद या खुश होने के बाद नाखूनों से सहलाते और खुजलाते हैं।

१लोक (3)- तथा दशनच्छेद्यस्य सात्म्यवशाद्‌धा॥

### नखच्छेद के भेद

अर्थ- जिस तरह से संभोग क्रिया के समय नाखूनों से सहभागी के शरीर पर हमला किया जाता है वैसी ही क्रिया दांतों से भी की जा सकती है।

१लोक (4)- तदाच्छुरितकर्मर्थचन्द्रो मंडल रेखा व्याघ्रनखं मयूरपदकं शशप्लुतकमत्पलपत्रकमिति रूपतोष्टविकल्पम्॥

अर्थ- निशानों के अनुसार नखच्छेद ४ प्रकार के होते हैं-

आच्छुरितक।

अर्थचन्द्र।

मंडल।

रेखा।

व्याघ्रनख।

मयूरपदक।

शशप्लुतक।

उत्पलपत्रक।

१८  
श्लोक (5)- कक्षौ स्तनौ गलः पृष्ठं जघनमुरु च स्थानानि॥

#### नखच्छेद स्थान

अर्थ- दोनों बगलों में, दोनों स्तन, गला, पीठ, जांधों और जांधों के जोड़ नाखून गढ़ाने के स्थान होते हैं।

१९  
श्लोक (6)- प्रवृत्तरतिचक्राणां न स्थानमस्थानं वा विद्यत इति सुवर्णनाभः॥

#### अर्थ- सुवर्णनाभ के विचार

कोई भी स्त्री और पुरुष जब संभोग क्रिया में लीन हो जाते हैं तो उन्हें इस बात का कोई ध्यान नहीं रह जाता कि सहभागी के शरीर में किस स्थान पर नाखूनों को गड़ाना चाहिए या किस स्थान पर नहीं गड़ाना चाहिए।

२०  
श्लोक (7)- तत्र सव्यहस्तानि प्रत्यग्रशिखराणि द्वित्रिशिखराणि चण्डवेगयोर्नखानि स्युः॥

अर्थ- ऐसे व्यक्ति जिनमें काम-उत्तेजना बहुत ज्यादा होती है वह अपने बाएं हाथ के नाखूनों को नुकीले तथा लंबे आकार के रखते हैं। कोई तो तो अपने हर नाखून में 2-3 नोकें रखता है।

२१  
श्लोक (8)- अनुगतराजि सममुज्जवलममलिनमविपाटितं विवर्धिष्णु मृदुस्त्रिग्धर्दर्शनमिति नखगुणा॥

#### अर्थ- नाखूनों के 8 गुण

1. नाखून के बीच में जो लाइने होती हैं वह नाखून के रंग की ही होनी चाहिए।
2. नाखून हमेशा चमकदार होने चाहिए।
3. नाखूनों को साफ करके रखना चाहिए।
4. सारे नाखून एक ही आकार के होने चाहिए न तो कोई ऊंचा-नीचा होना चाहिए और न ही कोई टेढ़ा-मेढ़ा होना चाहिए।
5. नाखून फटे हुए नहीं चाहिए।
6. नाखून बढ़ने वाले होने चाहिए।

7. नाखून हमेशा मुलायम होने चाहिए।

8. नाखून देखने में चिकने होने चाहिए।

श्लोक (9)- दीर्घाणि हस्तशोभीन्यालोके च योषितां चित्तग्राहीणि गौडानां नखानि स्युः॥

अर्थ- एक गौड़ नाम का देश है जहां के लोगों के नाखून लंबे होते हैं और यही लंबे नाखून उनके हाथों की शोभा माने जाते हैं। इन नाखूनों को देखकर ही वहां की युवतियां वहां के युवकों की ओर आकर्षित होती हैं।

श्लोक (10)- मध्यमान्युभ्यभाज्जित्र महाराष्ट्रकाणामिति॥

अर्थ- महाराष्ट्र में रहने वाले निवासियों के नाखून मध्यम आकार के होते हैं।

श्लोक (11)- तैः सुनियमितैर्हनुदेशे स्तनयोरथरे वा लघुकरणमनद्रतलेखं स्पर्शमात्रजननाद्रोमाञ्जकरमंते संनिपातवर्धमानशब्दमाच्छुरितकम्॥

अर्थ- नखच्छेद के लक्षण

अपने दोनों हाथों की उंगलियों को एकसाथ मिलाकर गालों, स्तनों और हौंठों पर इतने हल्के से स्पर्श करना चाहिए कि शरीर में उत्तेजना सी भर जाए। इसके बाद अंगूठे से दूसरे नाखूनों का खुटका मारकर स्पर्श करना आच्छुरितक नखच्छेद कहलाता है।

श्लोक (12)- प्रयोज्यायां च तस्याग्डसंवाहने शिरसः कण्डूयने पिटकभेदने व्याकुलीकरणे भीषणेन प्रयोगः॥

अर्थ- आच्छुरितक का प्रयोग

जब स्त्री पुरुष के शरीर को दबा रही हो, सिर खुजला रही हो, मुहांसों को फोड़ रही हो या जब स्त्री के शरीर में इतनी उत्तेजना भरनी हो कि वह बेचैन हो जाए तो उस समय आच्छुरितक नखच्छेद्य का इस्तेमाल करना चाहिए।

श्लोक (13)- हयस्वानि कर्मसहिष्णूनि विकल्पयोजनासु च स्वेच्छापातीनि दाक्षिणात्यानाम्॥

अर्थ- दक्षिण देश में रहने वाले लोग अक्सर छोटे नाखून रखते हैं। उनके ऐसे नाखून हर तरह के नखच्छेद्य कर सकते हैं। ऐसे नाखून न तो टूटते हैं और न ही मुड़ते हैं।

१८०क (14)- ग्रीवायां स्तनपृष्ठे च वक्रो नखपदनिवेशोऽर्थचन्द्रकः॥

अर्थ- अर्थचन्द्र

संभोग क्रिया के जब स्तनों तथा गर्दन पर अर्थचन्द्र की तरह नाखूनों को गढ़ाकर निशान बनाया जाता है तो उसे अर्थचन्द्र नखच्छेद्य कहा जाता है।

१८०क (15)- तावैव द्वौ परस्पराभिमुखौ मण्डलम्॥

अर्थ- मण्डल

जब दो अर्थचन्द्रों को एक-दूसरे के आमने-सामने पास ही पास किया जाता है तो उसे मण्डल नखच्छेद कहते हैं।

१८०क (16)- नाभिमूलककुन्दरवंक्षणेषु तस्य प्रयोगः॥

अर्थ- प्रयोग

संभोग क्रिया के समय सहभागी के पेड़ में कुन्दर और जांघों के जोड़ों में मण्डल नाम का गोल नखक्षत करना चाहिए।

१८०क (17)- सर्वस्थानेषु नातिदीर्घा लेखा॥

अर्थ- रेखा

संभोग क्रिया के समय सहभागी के शरीर के किसी भी अंग में अपने नाखूनों के द्वारा रेखा सी बनाई जा सकती है लेकिन कुछ ज्यादा बड़ी नहीं।

१८०क (18)- सैवा वक्रा व्याघ्रनखकमास्तनमुखम्॥

अर्थ- अगर उस रेखा को थोड़ा सा टेढ़ा खींच करके स्तन के या मुँह के पास खींची जाए तो उसे व्याघ्ररेखा कहा जाता है।

१८०क (19)- पञ्जभिरभिमुखैलेखा चुचुकाभिमुखी मयूरपदकम्॥

अर्थ- मयूरपदक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री के स्तनों के निष्पलों को हाथ की पांचों उंगलियों से पकड़कर जब अपनी तरफ खींचा जाता है तो उस समय जो रेखाएं बनती हैं उन्हें मयूरपदक कहा जाता है।

श्लोक (20)- तत्संप्रयोगश्लाघायाः स्तनचूचुके संनिकृष्टानि पञ्जनखपदानि शशप्लुतकम्॥

अर्थ- शशप्लुतक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री मयूर पदक नखक्षत की इच्छा करती है तो उस समय उसके स्तनों के निष्पलों को पांचों उंगलियों से दबाकर जो निशान बना दिया जाता है तो उसे शशप्लुतक कहते हैं।

श्लोक (21)- स्तनपृष्ठे मेखालापथे चोत्पलपत्राकृतीत्युपलपत्रकम्॥

अर्थ- उत्पल पत्रक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री के स्तन और कमर पर कमल की पंखुड़ियों की तरह नाखूनों से निशान बनाए जाते हैं उसे उत्पलपत्रक कहा जाता है।

श्लोक (22)- ऊर्वाः स्तनपृष्ठे च प्रवासं गच्छतः स्मारणीयके संहताश्चतस्त्रस्त्रिओ वा लेखाः। इति नखकर्माणि॥

अर्थ- जिस समय पुरुष अपनी पत्नी से दूर जा रहा होता है तो वह स्त्री के स्तनों तथा जांघों के जोड़ों पर अपने नाखूनों से निशान बना देता है ताकि स्त्री को उन निशानों को देखकर उसकी याद आती रहे।

श्लोक (23)- आकृतिविकारयुक्तानि चान्यान्यपि कुर्वीत॥

अर्थ- इनके अलावा स्त्री के शरीर पर दूसरे कई तरह के निशान बनाए जा सकते हैं।

श्लोक (24)- विकल्पानामनन्तत्वादानन्तयाच्च कौशलविधेरभ्यासस्य च सर्वगामित्वाद्रागात्मकत्वाच्छेद्यस्य प्रकारन् कोऽभिसमीक्षितुमर्हतीत्याचार्याः॥

अर्थ- कामशास्त्र की रचना करने वाले लेखकों ने यह कहा है कि अभ्यास तथा कौशल से व्यापकता के कारण नखक्षत के अलग-अलग भेदों की कोई गिनती नहीं की जा सकती है। इसके अलावा काम-उत्तेजना में भरकर व्यक्ति नखक्षत करने में लीन हो जाता है। इस अवस्था में उसे नखक्षत करने की कला और नखक्षत के भेदों का ध्यान नहीं रहता है।

श्लोक (25)- भवित हि रागेऽपि चित्रापेक्षा। वैचित्र्याच्च परस्परं रागो जनयित्वयः। वैचक्षण्ययुक्ताश्च  
गणिकास्तकामिनश्च किं पुनरिहेति वात्यायनः॥

अर्थ- इस बताए हुए कथन के मुताबिक आचार्य वात्स्यायन का कहना है कि उत्तेजित अवस्था में कई तरह की चित्र-विचित्र क्रियाएं करने की इच्छा बनी ही रहती है। जो लोग संभोग करने की बहुत सी कलाओं में निपुण होते हैं उनसे संभोग करने की इच्छा ऐसी स्त्रियां भी रखती हैं जो इस कला में बहुत ही ज्यादा निपुण होती हैं और ऐसी ही स्त्रियों की इच्छा इस कला में निपुण पुरुष भी किया करते हैं।

श्लोक (26)- न तु परपरिगृहीतास्वेवं। प्रच्छेन्नेषु प्रदेशेषु तासामनुस्मरणार्थं रागवर्धनाच्च विशेषान्दर्शयेत्॥

अर्थ- पराई स्त्रियों के साथ नखक्षत (नाखूनों से काटना), दन्तक्षत (दाँतों से काटना) आदि नहीं करना चाहिए बल्कि यादगार के लिए तथा उत्तेजना को बढ़ाने के लिए उनके गुप्त स्थानों में नाखूनों के द्वारा निशान बना देने चाहिए।

श्लोक (27)- नखक्षतानि पश्यन्त्या गृदास्थानेषु योषितः चिरोत्सृटाप्यभिनवा प्रीतिर्भवति पेशला॥

अर्थ- स्त्री जब अपने गुप्त अंगों में नाखूनों के निशान देखती है तो उसे अपने पुराने प्रेमी की याद आ जाती है।

श्लोक (28)- चिरोत्सृष्टेषु रागेषु प्रीतिर्गच्छेत्पराभवभ्। रागायतनसंस्मारि यदि न स्यान्नखक्षतम्॥

अर्थ- स्त्री के शरीर पर अगर रूप, गुण, यौवन की याद दिलाने वाले पुरुष के नाखूनों के निशान नहीं होते हैं तो इसके कारण उसका काफी दिनों से छूटा हुआ प्यार बिल्कुल ही समाप्त हो जाता है।

श्लोक (29)- पश्यतो युवतिं दूरान्नखोच्छष्टपयोधराम्। बहुमानः परस्यापि रागयोगश्च जायते॥

अर्थ- पुरुष ने जिस स्त्री के शरीर पर नाखूनों के निशान दिये हो उसे जब वह दूर से ही देखता है तो उसके अंदर उसके प्रति सम्मान और काम-उत्तेजना पैदा हो जाती है।

१८ोक (३०)- परषश्च प्रदेशु नखचिह्निंचिह्निः। चितं स्थिरमपि प्रायश्चलयत्येव योषितः॥

अर्थ- अपने शरीर के अलग-अलग अंगों में पुरुष के द्वारा लगाए गए नाखूनों के निशान देखकर अक्सर स्त्री का दिल खुश हो जाता है।

१९ोक (३१)- नान्युत्पट्टरं किंचिदस्ति रागविवर्धम्। नखदन्तसमुत्थानां कर्मणां गतयो यथा॥

अर्थ- स्त्री और पुरुष की काम-उत्तेजना को सबसे ज्यादा नखक्षत और दंतक्षत क्रिया तेज करती है।

जानकारी-

वात्स्यायन ने कामसूत्र में खासतौर पर ८ तरह के नखक्षतों को बताया है और यह भी बताया है कि नखक्षतों को किस समय, किस जगह और किस तरह का करना चाहिए।

संभोग क्रिया के समय नखक्षत करना एक कला माना जाता है। वात्स्यायन का यह विचार सबसे अच्छा लगता है कि संभोग करते समय पुरुष को हर क्रिया सही तरीके से करने की इच्छा होती है। जिस कार्य को पुरुष सबसे अलग तरीके से करता है स्त्रियां भी उसी पुरुष को सबसे ज्यादा प्यार करती हैं और उसको पाने की कोशिश में लगी रहती हैं।

वात्स्यायन के मुताबिक संभोग क्रिया के समय नखक्षत सिर्फ संभोग क्रिया को याद करना ही है। जो स्त्री किसी कारण से अपने प्रेमी को छोड़ देती है वह अगर अपने शरीर के गुप्त स्थानों में पुरुष के द्वारा दिए हुए निशानों को देखती है तो उसके दिल में प्रेमी के लिए फिर से प्यार उमड़ पड़ता है।

नखक्षत और दंतक्षत क्रिया के फलस्वरूप स्त्री के शरीर पर जो निशान होते हैं वह उसको उसके यौवनवास्था की याद दिलाते हैं। अगर उस तरह के निशान नहीं होते तो स्त्री लंबे समय से अपने छोड़े हुए प्रेमी को बिल्कुल ही भूल जाती है। यह ही निशान स्त्री को अपने रूप, यौवन और संभोग क्रिया में बिताए हुए पलों को आंखों के सामने ले आते हैं।

शरीर के उन भागों में काम-उत्तेजना बढ़ाने वाले केंद्र होते हैं जो संभोग से पहले की जाने वाली चुंबन, आलिंगन या नखक्षत क्रीड़ा की प्रक्रिया में यौनरूप से ज्यादा अनुभूतिशील होते हैं। आचार्य वात्स्यायन ने शरीर के जिन अंगों में नखक्षत करने का विधान बताया है वह सभी काम-उत्तेजना के केंद्र हैं। यौन दृष्टि के मुताबिक हर इंसान के यह अंग शरीर के दूसरे अंगों की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील होते हैं। इनके अलावा उसके कुछ ऐसे अंग भी हैं जो किसी खास मौके पर संवेदनशील हो जाते हैं। यौवन के समय यह काम-उत्तेजना के केंद्र ज्यादा खास स्थान रखते हैं। राग की अभिवृद्धि, पूर्ण अनुभूति और तृप्ति किस तरह से मिलती है- इसकी शिक्षा में नखक्षत आदि का जान जरूर हासिल करना चाहिए। यह प्रेमी का कर्तव्य होता है कि वह प्राकक्रीड़ा के स्त्री के शरीर के उन अंगों को तलाश करके विकसित करे जिसकी वजह से प्रेमिका में पूरी तरह से काम-उत्तेजना पैदा हो जाए। आचार्य वात्स्यायन ने इसी दृष्टिकोण को अपने ध्यान में रखकर नखक्षत और दंतक्षत अध्याय की रचना की है।

यहां पर एक बात बताना और भी जरूरी है कि आचार्य वात्स्यायन ने जिस तरह संभोग करने के लिए पुरुष और स्त्री को शश या मृगी आदि की संज्ञा दी है उसी तरह शारीरिक विज्ञान और मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से नखक्षत प्रयोग के

लिए भी उसे वर्गीकरण करना चाहिए था क्योंकि हर इंसान का सांचा बराबर होते हुए भी आवयिक गठन अलग-अलग होता है।

१लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे सांप्रयोगिके द्वितीयेऽधिकरणे चतुर्थ॑६द्यायः।

#### ६द्याय ५ दशन छेद्यविधि प्रकरण

१लोक(1)- उत्तरौष्ठमन्तर्मुखं नयनमिति मुतवा चुम्बनवद्दशनरदन स्थानानि॥

अर्थ- ऊपर वाला होंठ, आंख और जीभ को छोड़कर बाकी सभी वह अंग जिनमें चुंबन किया जा सकता है उनको दांतों से भी काटा जा सकता है।

१लोक(2)- गुणानाह- समाः स्निग्धच्छाया रागग्राहिणो युक्तप्रमाणा निश्छदास्तीक्षणागा इति दशनगुणाः॥

अर्थ- दांतों के गुण-

दांत ऊंचे-नीचे न होकर बिल्कुल समान होने चाहिए। दांतों में चमक होनी चाहिए, पान आदि खाने से दांत लाल नहीं होने चाहिए। दांत न तो बहुत ज्यादा बड़े होने चाहिए और न ही ज्यादा छोटे होने चाहिए। दांतों के बीच में छेद नहीं होना चाहिए। दांत एक-दूसरे से बिल्कुल सटे होने चाहिए और तेज होने चाहिए।

१लोक(3)- कुण्ठा राज्युद्रताः पुरुषाः विषमाः १लक्षणाः पृथ्वो विरला इति च दोषाः॥

अर्थ- दांतों के अवगुण-

दांतों का छोटा-बड़ा होना, बाहर की तरफ निकलना, एक-दूसरे से दूरी पर होना, खुरदरे होना, पीलापन छाना आदि।

१लोक(4)- गूढकमुच्छूनकं बिन्दुर्बिन्दुमाला प्रवालमणिर्मणिमाला खण्डाभकं वराहचर्वितकमिति दशनच्छेदनविकल्पाः॥

अर्थ- दांतों से काटने वाले ४ भेद-

गूढक, उच्छूनक, बिन्दुमाला, बिन्दु प्रवासमणि, मणिमाला, खण्डाभक्त तथा वराहचर्चित दांतों से काटने वाले ४ भेद होते हैं।

१लोक(5)- नातिलोहितेन रागमात्रेण विभावनीयं गूढकम्॥

अर्थ- गूढक

जब होंठों को दांतों से हल्का सा दबाया जाता है तो होंठ में हल्का सा लालपन आ जाता है लेकिन निशान न उभरे तो उसे गूढक कहा जाता है।

१लोक(6)- तदेव पीडनादुच्छूनकम्॥

अर्थ- उच्छूनक

होंठ को जोर से काटने को उच्छूनक कहा जाता है।

१लोक(7)- तदुभयं बिन्दुरधरमध्य इति॥

अर्थ- उच्छूनक गुढक और बिन्दु होंठों के बीच में किये जाते हैं।

१लोक(8)- उच्छूनकं प्रवालमणिश्च कपोले॥

अर्थ- उच्छूनक और प्रवालमणि गालों पर ही किये जाते हैं।

१लोक(9)- कर्णपूरचुंबन नखदशनच्छेद्यमिति सव्यकपोलमण्डनानि॥

अर्थ- दांतों और नाखून से काटना, चुंबन तथा कर्णपुर बांंग गाल के श्रृंगार कहलाते हैं।

१लोक(10)- दन्तौष्ठसंयोगभ्यासनिष्पादनात्प्रवालमणिसिद्धिः॥

अर्थ- हर बार एक ही जगह को दांतों और होंठों से दबाने की क्रिया को प्रवालमणि कहते हैं।

१८ोक(11)- सर्वस्यैयं मणिमालायाश् च।।

१८ोक(12)- अल्पदेशायाश्च त्वयो दशनद्वचसंदंशजा बिन्दुसिद्धिः।

अर्थ- शरीर के बहुत से अंगों पर बार-बार दांतों से काटने पर जब रेखा सी उभर आती है तो उसे मणिमाला कहते हैं।

१८ोक(13)- अल्पदेशायाश्च त्वयो दशनद्वयसंदंशजा बिन्दुसिद्धिः॥

अर्थ- दांतों से गर्दन आदि की खाल को खींचकर हल्का सा निशान बना देने को बिंदु कहते हैं।

१८ोक(14)- सर्वैविन्दुमालायाश्च।।

अर्थ- ऐसे ही शरीर में एक ही जगह पर बहुत सारे बिंदुओं को बिंदुमाला कहते हैं

१८ोक(15)- तस्यान्मालाद्वयमपि गलकक्षवंक्षणप्रदेशेषु॥

www.freehindipdfbooks.com

१८ोक(16)- मण्डलमिव विषमकूटकयुक्तं खण्डाभ्रकं स्तनपृष्ठ एव॥

अर्थ- दांतों से स्तनों पर बादल के टुकड़े की तरह निशान बनाने को खण्डाभ्रम कहते हैं।

१८ोक(17)- संहताः प्रदीर्घा बहवयो दशनपदराजयस्तामान्तराला वराहर्चर्वितकम्। स्तनपृष्ठ एव॥

अर्थ- स्तनों पर दांत गड़ाने की वजह से लाल रंग के बहुत सारे निशान बनाने को वराहर्चर्वितक कहा जाता है।

१८ोक(18)- तदुभ्यमपि च चण्डवेगयोः। इति दशनच्छेद्यानि॥

अर्थ- खण्डाभ्रक और वराहर्चर्वितक दांतों से काटने की क्रियाओं को वही स्त्री और पुरुष कर सकते हैं जिनमें संभोग क्रिया के समय काम-उत्तेजना बहुत ज्यादा हो जाती है। यहां पर दांतों से काटने के भैद समाप्त होते हैं।

१८०क(19)- विशेषका कर्णपूरे पुष्पापीडे ताम्बूलपलाशे तमालपत्रे चेति प्रयोज्यागमिषु  
नखदशनच्छेदयादीन्याभियोगिकानि॥

अर्थ- स्त्री के लिए लिए जा रहे पान के बीड़े पर, तमालपत्र पर, कानों में पहनने वाले नीलकमल पर और श्रंगार के लिए माथे पर लगाने वाले भोजपत्र पर पुरुष को अपने दांतों तथा नाखूनों से निशान बनाकर अपने प्यार का इजहार करना चाहिए।

१८०क(20)- देशासात्मयाच्च योषित उपचरेत्॥

अर्थ- देशोपचार-प्रकरण इसमें अलग-अलग देशों की स्त्रियों के नाखूनों और दांतों से काटने के रिवाज बताए जा रहे हैं।

= = =

१८०क(21)- मध्यदेश्या आर्यप्रायाः शुच्युपचाराश्चचुम्बननखदन्तपदद्वेषिण्यः॥

अर्थ- विन्द्ययाचल और हिमाचल के मध्य प्रदेश की आर्य जाति की स्त्रियां पवित्र प्यार पर विश्वास करती हैं। वह संभोग क्रिया के समय नाखून गढ़ाना, दांतों से काटना या चुंबन आदि से घृणा करती हैं।

१८०क(22)- बाह्लीकदेश्या आवन्तिकाश्च॥

अर्थ- बाह्लीक और अवंती देश की स्त्रियों को भी संभोग क्रिया के समय चुंबन आदि करना पसंद नहीं होता है।

१८०क(23)- चित्ररतेषु त्वासामभिनिवेशः॥

अर्थ- लेकिन बाह्लीक और अवंती देश की स्त्रियों को चित्ररत में खास रुचि रहती है।

१८०क(24)- परिष्वडग्चुंबननखदन्तचूषणप्रधानाः क्षतवर्जिताः प्रहणनसाध्या मालव्य आभीर्यश्च॥

अर्थ- मालवा और आभीर देश की स्त्रियों को आलिंगन, नाखूनों को गढ़ाना, दांतों से काटना, चुंबन और मुख मैथुन ज्यादा पसंद होता है। लेकिन इनके नाखूनों या दांतों से पुरुष के शरीर पर किसी तरह के जख्म नहीं होते हैं। संभोग क्रिया के समय पुरुष द्वारा प्रहार आदि करने पर भी इन्हें चरमसुख की प्राप्ति होती है।

१८०क(25)- सिन्धुषष्ठानां च नदीनामन्तरालीया औपरिष्टकसात्म्याः॥

अर्थ- सिंधु नदी तथा सतलुज नदी के आसपास रहने वाली स्त्रियां मुख मैथुन करना ज्यादा पसंद करती हैं।

श्लोक(26)- चण्डवेगा मन्दसीत्कृता आपरान्तिका लाट्यश्च॥

अर्थ- सूरत, भरोच, अपरान्तक आदि के पास रहने वाली स्त्रियों में काम-उत्तेजना बहुत ज्यादा होती है और वह संभोग करते समय मुँह से हल्की-हल्की सी-सी की आवाजें निकाला करती हैं।

श्लोक(27)- दृढप्रहणनयोगिन्यः खरवेगा एव, अपद्रव्यप्रधानाः स्त्रीराज्ये कोशलायां च॥

अर्थ- जिन देशों में स्त्रियों की संख्या ज्यादा होती है या कौशल देश में स्त्रियों को अपनी काम-उत्तेजना को शांत करने के लिए ऐसे पुरुषों की जरूरत होती है जो संभोग कला में पूरी तरह से निपुण होते हैं। उनको शांत करने के लिए निमित्त क्रिया अर्थात् उनकी योनि में पुरुष को अपने लिंग द्वारा तेज प्रहार करने पड़ते हैं। फिर भी जब स्त्री शांत नहीं होती तो उन्हें नकली लिंग का प्रयोग करना पड़ता है।

श्लोक(28)- प्रकृत्या मृद्या रतिप्रिया अशुचिरुचयो निराचाराश्चान्धयः॥

अर्थ- आंध्र प्रदेश की स्त्रियां वैसे तो स्वभाव से नाजुक होती हैं लेकिन वह संभोग क्रिया को पसंद करने वाली, मन में अश्लील विचार रखने वाली, चरित्रहीन गुणी वाली होती हैं।

श्लोक(29)- सकलचतुःषष्ठिप्रयोगरागिण्योऽश्लीलपरुषवाक्यप्रियाः शयने च सरभसोपक्रमा महाराष्ट्रिकाः॥

अर्थ- महाराष्ट्र देश की स्त्रियां संभोग की 64 कलाओं को पसंद करती हैं, वह गंदे और अश्लील और कड़वे बोल बोलती हैं और संभोग की शुरुआत बहुत ही जोश के साथ करती हैं।

श्लोक(30)- तथाविधा एव रहसि प्रकाशन्ते नागरिकाः॥

अर्थ- पाटलिपुत्र की स्त्रियां भी महाराष्ट्र की स्त्रियों की तरह ही होती हैं लेकिन वह 64 कलाओं का अभ्यास अकेले में ही करती हैं।

श्लोक(31)- मृद्यमानाश्चाभियोगान्मंद मंदं प्रसिञ्चन्ते द्रविडय॥

अर्थ- संभोग क्रिया की शुरूआत होने के बाद द्विंद देश की स्त्रियों में धीरे-धीरे रजसाव (मासिकसाव) होने लगता है।

१लोक(32)- मध्यमवेगः सर्वसहाः स्वाङ्गप्रहासिन्यः कुत्सिताश्लीलपरुषपरिहारिण्यो वानवासिकाः॥

अर्थ- कोंकण देश की स्त्रियां संभोग क्रिया में बहुत ही शिथिल होती हैं। वह इस क्रिया में चुंबन, आलिंगन, नाखूनों को गढ़ाना, दांतों से काटना, आदि सभी कुछ करवा लेती है लेकिन वह अपने शरीर के अंगों को ढककर रखना पसंद करती है और दूसरों के अंगों की हंसी उड़ाती हैं। यह स्त्रियां दुष्ट, गुस्सैल, गंदे लोगों को नापसंद करती हैं।

१लोक(33)- मृदुभाषिण्योऽनुरागवत्यो मृद्वयङ्ग्यश्च गौडयः॥

अर्थ- पश्चिमी बंगाल की स्त्रियां कोमल अंगों वाली और अपने पति से प्यार करने वाली होती हैं।

१लोक(34)- उपगृहनादिषु च रागवर्धनं पूर्वं पूर्वं विचित्रमुतरमुतरं च॥

अर्थ- आलिंगन, चुंबन, दांतों से काटना, नाखूनों को गढ़ाना, प्रहणन और सीत्कार में से हर एक के बाद एक काम-उत्तेजना बढ़ाने वाला होता है और पहले से ज्यादा अनोखा होता है।

१लोक(35)- वार्यमाणश्च पुरुषो यत्कुर्यातदनु क्षतम्। अमृष्यमाणा द्रविगुणं तदेव प्रतियोजयेत्॥

अर्थ- अगर पुरुष स्त्री के मना करने के बाद भी उसे नाखूनों से नोचता या दांतों से काटता है तो स्त्री को पुरुष के शरीर पर उससे ज्यादा तेज नोचना और काटना चाहिए।

१लोक(36)- बिन्दोः प्रतिक्रिया माला मालायाश्चाभ्रखण्डकम्। इति क्रोधादिवाविष्टा कलहान्प्रयोजयेत्॥

अर्थ- बिंदु के बदले माला, माला के बदले अभ्रखण्डक का निशान सहभागी के शरीर पर दांतों से इस तरह बनाना चाहिए जैसे कि गुस्से में बनाया गया हो। इसके अलावा और भी कई प्रकार के प्रेमयुद्ध भी किये जा सकते हैं।

१लोक(37)- वार्यमाणश् च पुरुषो यत् कुर्यात् तद् अनु क्षतम्। अमृष्यमाणा द्रविगुणं तद् एव प्रतियोजयेत्॥

१लोक(38)- बिन्दोः प्रतिक्रिया माला मालायाश् चअभ्रखण्डकम्। इति क्रोधादिवाविष्टा कलहान् प्रतियोजयेत्॥

१८०क(३९)- सकचग्रहमुत्रम्य मुखं तस्य ततः पिबेत्। निलीयेत दशोच्चैव तत्र तत्र मदेरिता॥

अर्थ- स्त्री को एक हाथ से पुरुष के बाल पकड़कर और दूसरे हाथ से उसकी ठोढ़ी को पकड़कर उसके हॉठों को चूसना चाहिए और इतने जोर से उसका आलिंगन करना चाहिए कि जैसे दोनों एक-दूसरे में समा रहे हो। इसके अलावा शरीर में बहुत से स्थानों पर दांतों से काटना भी चाहिए।

१८०क(४०)- विधानान्तमाह- उन्नम्य कण्ठे कान्तस्य संश्रिता वक्षसाः स्थलीम्। मणिमालां प्रयुञ्जीत यच्चान्यपि लक्षितम्।

अर्थ- इसके बाद पुरुष की छाती के ऊपर बैठकर एक हाथ से उसके मुँह को ऊपर उठाकर और दूसरे हाथ को उसके गले में डालकर उसकी गर्दन तथा उसके आसपास के भाग में अपने दांतों से मणिमाला के निशान बना दें।

१८०क(४१)- दिवापि जनसंबाधे नायकेन प्रदर्शितम्। उद्दिश्य स्वकृतं चिह्नं हसेदन्यैरपक्षिता॥

अर्थ- पुरुष अपने दोस्तों के साथ बैठे हुए जब उन्हें अपने शरीर पर अपनी पत्नी के द्वारा बनाए गए निशानों को दिखाता है तो उस समय स्त्री को दूसरी तरफ मुँह करके हँसना चाहिए।

१८०क(४२)- विकूणयन्तीव मुखं कुत्सयन्तीव नायकम्। स्वगात्रस्थानि चिह्नानि सासूयेव प्रदर्शयेत्॥

अर्थ- इसके बाद स्त्री को मुँह बनाते हुए और पुरुष को झिझिकी देते हुए अपने शरीर पर पुरुष द्वारा बनाए गए निशानों को दिखाना चाहिए।

१८०क(४३)- परस्परानुकूल्येन तदेवं लज्जमानयोः। संवत्सरशतेनापि प्रीपिनं परिहियते॥

अर्थ- एक-दूसरे के प्रति शर्म का और प्रेम का भाव रखते हुए स्त्री और पुरुष का प्रेम कई सौ सालों तक भी कम नहीं हो सकता।

जानकारी-

आचार्य वात्स्यायन ने दंतक्षत (दांतों से काटना) और नखक्षत (नाखूनों से काटना) के संबंधी देशाचार का उल्लेख करते हुए मध्य देश, वाहिक, अवन्ती, सिंधु-सतलज का अंतराल, मालव, स्त्री-राज्य कौशल, अपरान्तक, महाराष्ट्र नगर, आंध्र, द्रविड़, बन, लाट, गौड़, कोकण और आभीर देशों का वर्णन किया है।

आचार्य वात्स्यायन के इस वर्णन के द्वारा सिर्फ भारत का मानचित्र ही प्रस्तुत नहीं होता बल्कि हर देश के लोगों की प्रवृत्तियों का भी परिचय मिलता है।

१लोक- इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे साम्प्रयोगिके द्वितीयोऽधिकरणे दशनच्छेद्यविधयो देश्योऽचोपचाराः पञ्जमोऽध्यायः॥

#### अध्याय 6 संवेशन प्रकरण (संभोग क्रिया के अलग-अलग आसन)

१लोक (1)- रागकाले विशाल यन्स्येव जघनं मृगी संविशेदुच्चरेत्॥

अर्थ- इसमें संभोग क्रिया करने के अलग-अलग तरीकों को बताया जाएगा।

१लोक (2)- अवहासयन्तीव हस्तिनी नीचरते॥

अर्थ- अगर बड़ी योनि वाली हस्तिनी स्त्री छोटे लिंग वाले शश पुरुष के साथ संभोग करती है तो उसे अपनी जांघों को सिकोड़ लेना चाहिए।

१लोक (3)- न्याय्यो यत्र योगस्तत्र समपुष्ठम्॥

अर्थ- अगर स्त्री और पुरुष के योनि और लिंग एक ही आकार के हो तो ऐसे में संभोग क्रिया के समय स्त्री को अपनी जांघों को समेटने की जरूरत नहीं है।

१लोक (4)- आश्यां वडवा व्याख्याता॥

अर्थ- पहले बताई गई दोनों तरह की जातियों की तरह ही बढ़वा जाति की स्त्रियों के बारे में समझा जाता है। ऐसे पुरुष अगर अश्व जाति से संबंधित हैं तो बढ़वा जाति की स्त्री को संभोग करते समय अपनी जांघों को चौड़ा कर लेना चाहिए लेकिन अगर पुरुष वृष्ट जाति से संबंधित है तो स्त्री को अपनी जांघों को समान्य ही रखना चाहिए।

१लोक (5)- तत्र जघनेन नायकं प्रतिगृहवीयात्।

अर्थ- संभोग करते समय स्त्री को लेटने के बाद अपनी दोनों जांघों से पुरुष को जकड़ लेना चाहिए।

श्लोक (6)- अपद्रव्याणि च सविशेषं नीचरते॥

अर्थ- अगर संभोग करने वाले पुरुष का लिंग छोटा है और वह स्त्री की काम-उत्तेजना को शांत करने में असमर्थ रहता है तो इसके लिए स्त्री नकली लिंग का प्रयोग कर सकती है।

श्लोक (7)- उत्फुल्लकं विजृम्भितकमिन्द्राणिकं चेति त्रितयं मृग्याः प्रायेण॥

अर्थ- उत्फुल्लक, विजृम्भितक और इन्द्राणिक तरीकों से मृगी स्त्री को अपनी योनि चौड़ी करनी चाहिए।

श्लोक (8)- शिरो विनिपात्योर्ध्वं जघनमुत्फुल्लकम्॥

अर्थ- उत्फुल्लक

मृगी स्त्री अगर अपने शिरोभाग को नीचा करके कटि वाले भाग को ऊंचा कर लेती है तो इससे उसका योनिद्वार चौड़ा हो जाता है। इसे उत्फुल्लक कहते हैं। इसके लिए स्त्री को अपनी कमर के नीचे तकिया रख लेना चाहिए।

श्लोक (9)- तत्रापसारं दद्यात्॥

अर्थ- जब स्त्री का शिरोभाग नीचा हो जाए और नितंब वाला भाग ऊंचा उठ जाए तो उस समय स्त्री और पुरुष को संभोग करते समय थोड़ा पीछे हटते जाना चाहिए।

श्लोक (10)- अनीचे सकिथनी तिर्यगवसज्य प्रतीच्छेदिति विजृम्भितकम्॥

अर्थ- विजृम्भितक

स्त्री की दोनों जांघों को फैलाकर ऊंचा उठाने से उसका योनिद्वार चौड़ा हो जाता है। ऐसे में अगर पुरुष अपने लिंग को तिरछा करके स्त्री की योनि में प्रवेश कराता है तो उसे विजृम्भितक कहा जाता है।

श्लोक (11)- पाश्वर्योः सममूरु विन्यस्य पाश्वर्योर्जानुनी निदध्यादित्यभ्यासयोगादिन्द्राणी॥

अर्थ- सबसे पहले इस संभोग क्रिया की इस विधि को इन्द्राणी ने किया था जिसकी वजह से इसका नाम इन्द्राणी पड़ा। इस विधि का थोड़े दिनों तक अभ्यास करने से यह पूरी तरह से आ जाती है। पुरुष को स्त्री की जांघों को अपने दोनों हाथों से पकड़ लेना चाहिए और उसके पैरों को अपनी दोनों कांखों से लगा लेना चाहिए।

श्लोक (12)- तयोच्चतररतस्यापि परिग्रहः॥

अर्थ- अगर पुरुष अश्व जाति का हो और स्त्री मृगी जाति की हो तो भी इन्द्राणि आसन के जरिये दोनों संभोग के चरम सुख पर पहुंच सकते हैं।

श्लोक (13)- संपुटेन प्रतिग्रहो नीचरते॥

अर्थ- नीचरत में स्त्री को अपनी योनि को सिकोड़ लेनी चाहिए।

श्लोक (14)- एतेन नीचतररतेऽपि हस्तिन्याः॥

अर्थ- ऐसे ही अगर हस्तिनी स्त्री शश जाति के पुरुष के साथ संभोग करती है तो उनके लिए सम्पुटक आसन अच्छा रहता है।

श्लोक (15)- संपुटकं पीडितकं वेष्टितकं वाडवकमिति॥

अर्थ- नीची जाति में संपुटक, पीडितक, वेष्टितक तथा वाडलक चार तरह के उपवेशन होते हैं।

श्लोक (16)- ऋजुप्रसारितावुभावप्युभयोश्चणाविति संपुटः॥

अर्थ- संभोग क्रिया के समय जब पति और पत्नी दोनों अपनी-अपनी टांगों को सीधे पसारकर मिलाते हैं तो उसे सम्पुटक कहते हैं।

श्लोक (17)- स द्रविविधः पाश्चसंपुट उत्तानसंपुटश्च। तथा कर्मयोगात्॥

### अर्थ- पाश्वसम्पुट- उत्तानसम्पुट

सम्पुटक दो तरह का होता है- पाश्व सम्पुट तथा उत्तान सम्पुट। जब स्त्री और पुरुष करवट लेकर एक-दूसरे के सामने मुँह करके संभोग करते हैं तो उसे पाश्व सम्पुट कहा जाता है। जब स्त्री बिल्कुल सीधी लेटी हो और पुरुष उसके ऊपर लेटकर संभोग करता है तो उसे उत्तान सम्पुट कहते हैं। अगर दोनों करवट लेकर संभोग करना चाहे तो ऐसे में पुरुष को दाईं तरफ लेटना चाहिए। संभोग करने की यह विधि हर तरह के पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान है।

श्लोक (18)- पाश्वर्णं तु शयानो दक्षिणेन नारीमधिशयीतेति सार्वत्रिकमेतत्॥

अर्थ- संभोग के समय पुरुष को स्त्री को अपनी बाईं तरफ सुलाना चाहिए।

श्लोक (19)- संपुटकप्रयुक्तयन्त्रेणैव दृढमूरुं पीड्येदिति पीडितकम्॥

### अर्थ- पीडितक

संभोग करते हुए स्त्री-पुरुष जब सम्पुटक आसन का प्रयोग करते हैं तो वह एक-दूसरे की जांघों को बहुत जोर से दबाते हैं। इसे पीडितक कहते हैं।

श्लोक (20)- ऊरु व्यत्यस्येदिति वेष्टितकम्॥

### अर्थ- वेष्टितक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री अपनी योनि को सिकोइने के लिए एक जांघ को दूसरी जांघ पर रखती है तो उसे वेष्टितक कहते हैं।

श्लोक (21)-वडवेव निष्ठुरमवगृह्वयादिति वाडवकमाभ्यासिकम्॥

### अर्थ- वाडवक

जिस तरह से घोड़ी अपनी योनि के द्वारा घोड़े के लिंग को बहुत तेजी से कस लेती है उसी तरह से स्त्री अपनी योनि से पुरुष के लिंग को जकड़ लेती है तथा अलिंगन, चुंबन आदि करती है तो इस आसन को वाडवक कहा जाता है। इसके लिए खास तरह के अभ्यास की जरूरत होती है जिसमें वेश्याएं बहुत ज्यादा निपुण होती हैं।

श्लोक (22)- तदान्धीषु प्रायेण, इति संवेशनप्रकारा बाभ्रवीया:

अर्थ- इस आसन को ज्यादातर आंध्रप्रदेश की स्त्रियां प्रयोग करती हैं।

सौवर्णनाभास्तु॥

इसके अंतर्गत महार्षि सुवर्णनाभ के विचार प्रकट कर रहे हैं।

१लोक (23)- उभावप्युरु ऊर्ध्वाविति तदधुग्नकम्॥

अर्थ-भुग्नक

आचार्य सुवर्णनाभ का मानना है कि भुग्नक नाम का एक और आसन है जिसमें स्त्री अपनी दोनों जांधों को ऊपर तान देती है।

१लोक (24)- चरणावृद्धव नायकोऽस्या धारयेदिति जृमिभतकम्॥

अर्थ- जृमिभतक

जब पुरुष स्त्री की दोनों टांगों को अपने कंधों के ऊपर रख लेता है तो उसे जृमिभतक कहा जाता है।

१लोक (25)- तत्कुञ्चतावुत्पीडितकम्॥

अर्थ- पीडितक

जिस समय बिल्कुल सीधी लेटी हुई स्त्री अपनी पसारी हुई टांगों को मोड़कर अपने ऊपर लेटे हुए पति की छाती के नीचे मोड़कर अड़ा लेती है और पुरुष छाती से उन्हें दबाकर संभोग करता है तो उसे उत्पीडितक कहते हैं।

१लोक (26)- तदेकस्मिप्रसारितेऽर्धपीडितकम्॥

अर्थ- अर्धपीडितक॥

अपनी दोनों टांगों को फैलाकर लेटी हुई स्त्री जब अपनी एक टांग को मोड़कर पुरुष की छाती से लगाकर संभोग करती है तथा फिर उसे धीरे से फैलाकर अपनी दूसरी टांग को मोड़कर बारी-बारी से संभोग क्रिया करती है तो उसे अर्ध पीडितक कहा जाता है।

१लोक (27) -नायकस्यांस एको द्वितीयकः प्रसारित इति पुनः पुनर्व्यत्यासेन वेणुदारितकम्॥

### अर्थ- वेणुदारितक

जब लेटी हुई स्त्री अपने ऊपर लेटे हुए पुरुष के कंधे पर एक टांग रखती है तथा फिर पहली टांग को फैलाकर दूसरी टांग को पुरुष के दूसरे कंधे पर रखकर संभोग करती है तो उसे वेणुदारितक कहते हैं।

श्लोक (28)- एकः शिरस उपरि गच्छेद्वितीयः प्रसारित इति शूलाचितक- माभ्यासिकम्॥

### अर्थ- शूलाचितक

स्त्री जिस समय अपनी एक टांग को पुरुष के सिर पर रखकर और दूसरी टांग को फैलाकर संभोग करती है तथा फिर दूसरी टांग को सिर पर रखकर पहली टांग को फैलाकर संभोग क्रिया करती है तो उसे शूलाचितक कहा जाता है। यह आसन भी लगातार अभ्यास करने से सफल होता है।

श्लोक (29)- संकुचितौ स्वस्तिदेशो निदध्यादिति कार्कटकम्॥

### अर्थ- कार्कटक

जिस तरह से केकड़ा अपने पैरों को पूरी तरह से सिकोड़ लेता है उसी तरह से स्त्री भी लेटकर अपनी टांगों को सिकोड़कर पुरुष की नाभि में लगाकर जब संभोग क्रिया करती है तो उस आसन को कार्कटक कहते हैं।

श्लोक (30)- ऊर्ध्वावूरु व्यत्स्येदिति पीडितकम्॥

### अर्थ- पीडितक

संभोग क्रिया के समय जब स्त्री अपनी एक जांघ को दूसरी जांघ से बहुत तेजी से दबाती है तो उस आसन को पीडितक कहते हैं।

श्लोक (31)- जडघाव्यत्यासेन पद्मासनवत्॥

### अर्थ- पद्मासन

पलंग पर लेटी हुई स्त्री जब अपने बाएं पैर को दाएं पैर के जोड़ में और दाएं पैर को बाएं पैर के जोड़ में रखकर संभोग क्रिया करती है तो उसे पद्मासन कहते हैं।